LOK SABHA

Wednesday, April 3, 1968|Chaitra 14, 1890 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Visit by General Ne Win of Burma

†

*1018. SHRI BENI SHANKER SHARMA:
SHRI HIMATSINGKA:

Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether General Ne Win, Burma's Head of State, visited India in March, 1968;

(b) if so, the nature of the discussions held; and

(c) the outcome thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI B. R. BHAGAT): (a) to (c). Chairman of the Revolutionary Council of the Union of Burma, General Ne Win, accompanied by Madame Ne Win, paid an informal visit to India from March 15 to March 22, 1968. Opportunity was taken to have an exchange of views on matters of mutual interest. It is not customary to divulge the details of such talks.

श्री बेनी शंकर शर्मा : अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी जानते हैं कि बर्मा में लाखों की संख्या में पीढ़ियों से भारतीय बसे हुए थे, अगर उन में से बहुतों को अपना व्यापार तथा सम्पत्ति छोड़ कर भारत वर्ष हाल ही में आना पड़ा है । आज भी वे भारतवर्ष में शरणार्थियों के रूप में जगह जगह पड़े हुए हैं, और उन के पास सर छिपाने के लिये भी जगह नहीं है । जब बर्मा के प्रधान जनरल ने विन यहां आये थे तब मैं समझता हूं उन से हमारे प्रधान मंत्री जी की बहुत से विषयों पर चर्चा हुई होगी । क्या प्रधान मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगी कि उन्होंने इन शरणार्थियों को उन की छोड़ी हुई सम्पत्ति के बारे में किसी प्रकार का कम्पेन्सेशन या मुआवजा दिलाने की भी चर्चा की थी ? यदि हां, तो जनरल ने विन की इस विषय में क्या प्रतिक्रिया थी ?

श्री ब० रा० भगत : इस बारे में उन से चर्चा उठाई गई थी और उन्होंने इस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने और इस मामले को जल्दी से हल करने के बारे में कहा था ।

श्री बेणी शंकर शर्मा: प्रधान मंत्री जी जानती हैं कि विद्रोही नागा आये दिन चीन की सैर के लिये बर्मा की सीमाओं को पार कर चीन जाते हैं । इस कार्य में उन्हें बर्मी नागाओं का भी पूरा सहयोग प्राप्त होता है, जिसकी वजह से वे हमारे सीमा प्रहरियों की आंखों में धूल झोंकने में समर्थ होते हैं । क्या बर्मा के प्रधान के साथ हुई बात चीत के दौरान उन्होंने नागा समस्या के इस पहलू पर भी बात की थी ? यदि हां, तो उन की प्रतिक्रिया क्या थी ? क्या नारकोदम द्वीप के सम्बन्ध में भी उन से कुछ चर्चा हुई थी जिस पर बर्मियों ने भी अपना दावा किया है ?

श्री ब० रा० भगत : माननीय सदस्य को यह बात मालूम है कि जब हमारे पड़ौसी देश के माननीय अतिथि आते हैं तो उन के साथ बहुत सी बातें होती हैं । लेकिन उन सब की तफसील देना उचित नहीं होगा और न यह हमारे राष्ट्र के हित में होगा ।

श्री वेणीशंकर शर्मा : नागा समस्या हमारी एक ज्वलंत समस्या है और बर्मा के जरिये विद्रोही नागा चीन आते जाते रहते हैं । यह एक तथ्य है इसलिये यह तो एक ऐसा अहम सवाल था जिस पर चर्चा होनी ही लाजिमी थी । अतएव मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि इस तरह की दरअसल कोई चर्चा हुई थी या नहीं ?

श्री ब० रा० भगत : चर्चा हुई थी लेकिन अगर उस के बारे में तफसील माननीय सदस्य पूछना चाहते हैं तो वह बतलाना मुश्किल है ।

श्री हुकम चन्द कछवाय: जो सवाल पूछा गया है, उस के बारे में पूछना चाहते हैं, सब के बारे में नहीं ।

SHRI HIMATSINGKA: May I know whether any claim was put forward by Burma about the Islands near Andaman and Nicobar?

SHRI B. R. BHAGAT: No, Sir.

श्री मधु लिमये : क्या मंत्री महोदय का ध्यान "हिन्दुस्तान स्टैन्डर्ड" में प्रकाशित इस समाचार की ओर गया है कि निर्माण विभाग या अन्य किसी सरकारी विभाग के अधिकारी जब नरकुण्डम् गये थे तब उन्होंने बर्मी नेवी के द्वारा लगाये या उन के नाम से लगाये गये स्तम्भ या पत्थर वहां देखे थे ? यदि हां, यदि इस की ओर अगर उनका ध्यान गया है, तो क्या इस सम्बन्ध में बर्मा से सरकार ने जानकारी मांगी है कि क्या सचमुच उनकी नेवी के द्वारा वह लगाये गये थे या उनके नाम पर सम्बन्धों को बिगाड़ने के लिये किसी ने लगा दिये थे ? अगर किसी दूसरे ने लगा दिये थे तो वह लोग कौन हैं ?

श्री ब० रा० भगत : जहां तक इस द्वीप का सवाल है यह बतलाया जा चुका है कि बर्मा ने उस पर कोई अधिकार स्थापित नहीं किया है और वह हमारे कब्जे में है ।

श्री मधु लिमये: मैं ने अधिकार की कोई चर्चा नहीं की है ।

श्री ब० रा० भगत : मझे कहने दीजिये ।

MR. SPEAKER: Did you discuss this aspect with the Burmese Premier when he visited India, because only that is covered by the question?

SHRI B. R. BHAGAT: No, Sir.

MR. SPEAKER: Then, it does not arise.

श्री मधु लिमये: माफ कीजियेगा । मैं ने पूछा था कि क्या यह बात सही है कि बर्मा की नेवी के नाम से पत्थर लगाये गये थे . . .

MR. SPEAKER: Maybe so. But the main question is:

> "Whether General Ne Win, Burma's Head of State visited India in March, 1968; if so, the nature of the discussions held."

He says that they did not talk about this. So, it does not arise.

SHRI NARENDRA SINGH MAHIDA: Some years back some persons of Indian origin, before leaving Burma for India, handed over their gold and other jewellery to the Indian Embassy in Burma. Ultimately, we were forced to return those ornaments and jewellery to the Burmese.

MR. SPEAKER: He is covering the whole ground of the Indo-Burma problem. The question relates only to the talks with Gen. Ne Win.

SHRI NARENDRA SINGH MAHIDA: I want to know whether any talks have taken place with the Burmese head of State about these jewelleries and gold ornaments.

SHRI PILOO MODY: Did they discuss the sharing of the spoils?

SHRI SWELL: There are reports in the newspapers that following the visit of Gen. Ne Win the Government of India and the Government of Burma have agreed to jointly set up a security corridor along the Indo-Burmese frontier. I would like to know whether there is any truth in those reports and whether this particular subject was discussed with Gen. Ne Win. If this report is correct, then I would like to know what is the length of the security corridor, what will be its depth and what would be the *modus operandi* of the joint operations along this corridor.

SHRI B. R. BHAGAT: There is no truth in that report.

श्री शिवचन्द्र झा : मैं मंत्री महोदय से जानना चहाता हूं कि हिंदुस्तान और बर्मा के बीच में बार्डर डिस्प्यूट कितने मील की है और उस के सम्बन्ध में क्या जनरल ने विन से बातें हुई हैं ? यदि हुई हैं, तो क्या हुई ?

श्री ब० रा० भगत : यह मामला तो डिस्प्यूट का नहीं है । वह तो भारत और बर्मा की सीमा के बारे में जो एक समझौता है उस के हिसाब से एक बाउंड्री कमिशन बिठलाने की बात है । वह चीज कभी भी हमारे बीच में झगड़े की नहीं रही है ।

SHRI BEDABRATA BARUA: It has been reported in the newspapers that the question of joint patrolling has been discussed. I know that it will not be divulged in detail but I would like to know whether any specific decision has been taken in regard to joint patrolling on the Indo-Burma border.

SHRI B. R. BHAGAT: There is no question of any joint patrolling.

SHRI HEM BARUA: Under the cover of the so-called suspension of operations agreement, the Naga hostiles have established contacts with China *via* Kachin area of Burma and it has been reported that two top Naga underground leaders with their followers have already gone to Kachin area to go to Peking. Now the suspension of operation agreement is there and India has done nothing to stabilise peace in that area, whereas the Naga hostiles are taking advantage of this peace ushered in by this agreement. In that context may I know whether, as reported in the papers, our Prime Minister had a discussion with Gen. Ne Win specifically on this question of sealing the Indo-Burma border so that our Naga hostiles and Mizo hostiles might not take advantage of the Kachin area in Burma to establish contacts with China and, if so, what was the result?

THE PRIME MINISTER, MINISTER OF ATOMIC ENERGY, MINISTER OF PLANNING AND MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRIMATI INDIRA GANDHI): Sir, as the Minister has stated, there was no question of any joint action. We are making every effort to cover the border from our side and they are doing it from their side.

MR. SPEAKER: Shri Sitaram Kesri.

SHRI HEM BARUA: Sir, the Prime Minister has not given any information in reply to my question.

MR. SPEAKER: They cannot reveal the details of the talks.

SHRI HEM BARUA: She said that on our part we have taken the decision to seal the border; yet, the top leaders of the Naga Underground go to China.

श्री सीताराम केसरी : बर्मा की उत्तरी सीमा पर बीस पच्चीस हजार चीनी सैनिकों के केन्द्रित होने की वजह से हमारे विद्रोही नागाओं और मिजोज की ट्रेनिंग के जो समाचार अखबारों में प्रकाशित हुए हैं क्या यह सही है कि उनकी वजह से जनरल ने विन भारत आए थे, उन से प्रेरित हो कर वह भारत आये थे ? यदि हां, तो इस सम्बन्ध में आपको कोई सूचना है या आपने कोई योजना इस सम्बन्ध में उन से बात कर के बनाई है ?

श्री ब० रा० भगत : किसी खास बात से प्रेरित हो कर वह यहां आए हों, ऐसी बात नहीं है । यहां वह मैत्री भाव ले कर आए । किसी भावना से प्रेरित हो कर वह यहां आए, ऐसा कहना ठीक नहीं है ।

श्री सूरज पाण्डेय : पहले एक प्रश्न के उत्तर में मंत्री महोदय ने बताया है कि बर्मा से आने वाले शरणार्थियों के सम्बन्ध में उन से बातचीत हुई थी और उन्होंने आश्वासन दिया था कि भविष्य में ऐसी बात नहीं होगी। उन से बातचीत के बाद फिर भी बर्मा से लोग चले आ रहे हैं। मैं जानना चाहता हूं कि सरकार उन के लिए क्या कार्रवाई कर रही है । उन के आश्वासन से काम नहीं चलेगा । अब भी रोज शरणार्थी आ रहे हैं। मैं जानना चाहता हूं कि इस संबंध में सरकार क्या कदम उठा रही है ?

श्री ब० रा० भगत : सवाल उन के बारे-में नहीं था । सवाल यह था कि जो लोग अपनी सम्पत्ति वगैरह छोड़ कर आए हैं उन को जो दिक्कत हुई है उनका क्या होगा । मैं ने यह कहा कि उस के बारे में बातचीत हुई थी

श्री इसहाक सामभली : आने के बारे में कहिये ।

श्री ब० रा० भगत : जो वहां के नागरिक नहीं हैं उन को आज या कल आना ही पड़ेगा । उन को हम उचित सुविधायें देते हैं बसने के लिये और दूसरी प्रकार की भी सहायता देते हैं ।

SHRI PILOO MODY: Apparently, from the answers that we have been receiving, the Government of India had absolutely no discussion with these people at all because nothing seems to be revealed. Did they at least discuss the price of cheese in China?

MR. SPEAKER: Next question.

डा० धर्म तेजा का स्वदेश प्रत्यार्पण

*1019. **श्री मधु लिमये** : क्या वैदेशिक कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) कोस्टारिका अथवा अन्य किसी देश से डा० धर्म तेजा के स्वदेश प्रत्यर्पण के सम्बन्ध में की गई कार्यवाही का क्या परिणाम निकला है;

(ख) क्या यह सच है कि सरकार को असंगत कार्यवाहियों अथवा असावधानी के कारण कोस्टारिका सरकार ने डा० धर्म तेजा को भारत सरकार के सुपुर्द करने से इन्कार कर दिया है ;

(ग) क्या किसी और देश ने डा० तेजा को शरण देने का निर्णय किया है ; और

(घ) यदि हां, तो इस सम्बन्ध में भारत सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ?

वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री सुरेन्द्रपाल सिंह) : (क) भारत सरकार ने 18 मार्च 1968 को कोस्टारिका की सरकार से डाक्टर और श्रीमती धर्मतेजा के प्रत्यर्पण के लिए औपचारिक रूप से प्रार्थना की थी। कोस्टारिका की सरकार इस बारे में विचार कर रही है ।